Assignment 28

(A) Translate the following into Hindi ***or***

break it into 3 or 5 or 8 sentences easier to understand.

As does the bird, among beloved branches, when, through the night that hides things from us, she has rested near the nest of her sweet fledglings and, on an open branch, anticipates the time when she can see their longed-for faces and find the food with which to feed them – chore that pleases her, however hard her labours – as she awaits the sun with warm affection, steadfastly watching for the dawn to break: so did my lady stand, erect, intent, turned toward that part of heaven* under which the sun is given to less haste; so that, as I saw her in longing and suspense, I grew to be as one who, while he wants what is not his, is satisfied with hope.

***** that part of heaven: the zenith

[from **Dante**]

(B) Translate the following passage into English.

'जीवनी' का सूत्रपात कैसे हुआ और उसे पाठक किस रोशनी में देखें इसके बारे में मुझे जो निवेदन करना था वह मैं कर चुका। लेकिन शायद इसके बाद भी कुछ कहने को रह जाता है, क्योंकि पाठक के सामने इस भूमिका के साथ जीवनी का एक भाग ही पहुँचेगा, दो बाकी रह जायेंगे!

'शेखर : एक जीवनी' तीन भागों में विभक्त है। तीनों भाग एक ही कथासूत्र में गुँथे होकर भी अलग अलग भी प्रायः सम्पूर्ण हैं। कहा जा सकता है कि जीवनी वास्तव में तीन स्वतंत्र उपन्यासों का अनुक्रम है। ऐसा न भी होता तब उन्हें अलग–अलग छापा जा सकता है; ऐसा होने पर तो विशेष सफाई देने की जरूरत नहीं है। जो एक भाग पढ़ने के बाद दूसरा पढ़ना नहीं चाहेंगे उनको यह सोचने की आवश्यकता नहीं कि उन्होंने अधूरी कहानी पर वक्त बरबाद किया, वे एक को ही पूरा उपन्यास मान सकते हैं और उसी पर अपनी राय भी कायम कर सकते हैं, मैं पक्षपात की शिकायत नहीं करूँगा।

किन्तु जो पाठक पहला भाग पढ़ते हुए जानना चाहते हैं कि शेष भाग वे क्यों पढ़ें या उनके बारे में कैसी पूर्व-धारणा बनाकर चलें उनके लिए कुछ निवेदन करना यहाँ अप्रासंगिक न होगा। अतः उन पाठकों के लिए मैं कहना चाहता हूँ कि अभिप्राय की – यदि उतना दम्भ कर सकूँ तो कहूँ कि सन्देश की! – दृष्टि से शेखर के तीन भागों में एक एकान्तता है; कालीन के रंग बिरंगे बाने को जैसे मोटे और सख्त बटे हुए सूत का एकरंगा ताना धारण करता और सहता है उसी तरह जीवनी के तीन भागों की रंगीन गाथा में मेरे अभिप्रेत, मेरे कथ्य का एक तंतु है, जो एक है, अविभाज्य है, मेरी ओर से जीवन की आलोचना और जीवन का दर्शन है। 'जीवनी' को गढ़ते हुए मैंने कलावस्तु गढ़ने का यत्न किया है; इसलिए वह चाहे कैसी भी हो उसे लेकर मैं पाठक के आगे प्रार्थी के रूप में तो आ सकता नहीं पर इतना कहूँगा कि यदि आप निर्णेता होने का हौसला करते हैं तो पहले पूरा पढ़ने की उदारता भी दिखाइए।

['**अज्ञेय** ' से]